Contents

- : विषयानुक्रमणिका : -

भूमिका : : पृ० 'क' से 'ढ'

खण्ड : क पृ० १ से २२- २४

अध्याय - १ : : उपन्यास : स्वरूप-विवेचन पृ० १ से ८१

विषय-प्रवेश : उपन्यास - एक नयी विधा : परिभाषा : तत्व-विवेचन : कथावस्तु : शिल्पविधि : पात्र : पात्रांकन की प्रमुख विधियां : पात्रों का वर्गीकरण : कथोकथन : कथोकथन के गुण : देशकाल : जीवन-दृष्टि शैली : उपन्यास की रचना-प्रक्रिया : उपन्यास का प्रयोजन : अन्य काव्य रूपों से तुलना : उपन्यास और कहानी : उपन्यास और नाटक : उपन्यास और महाकाव्य : साहित्यिक उपन्यास की पहचान : उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियां : आदर्शवाद : यथार्थवाद : प्रकृतिवाद : अस्तित्व वाद : निष्कर्ष ।

अध्याय -२ : : प्रारम्भिक काल (सन् १८७७ से १९१७ ई०) पृ० ८२ से १०९

आमुख : युगीन चेतना : हिन्दी का प्रथम उपन्यास : वर्गीकरण : अनूदित उपन्यास : सामाजिक उपन्यास : ऐतिहासिक उपन्यास : तिलस्मी एवं ऐय्यारी के उपन्यास : जासूसी एवं साहसिक उपन्यास : निष्कर्ष ।

अध्याय - ३ : : प्रेमचन्द और उनका युग (सन् १९१८-१९३६) पृ० ११०-५१

युगीन परिस्थितियां : गांधी और मुंशी : प्रेमचन्द एक कृती व्यक्तित्व : शैशवकालीन प्रभाव : संघर्ष की तपिश : अध्ययन : प्रेमचन्द का औपन्यासिक कृतित्व : प्रारम्भिक कृतियां : सेवासदन : प्रेमाश्रम से कर्मभूमि : गोदान प्रेमचन्द की विशेषताएं : त्रुटियां : अन्य उपन्यासकार : निष्कर्ष ।

अध्याय - ४ : : प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास (१९३६-१९६०) पृ० १५ से २४

युगीन परिस्थितियां : प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास प्रवृत्तियां : सामाजिक

उप उपन्यास : समाजवादी-उपन्यासपाण्डेय बेचन शर्मा : भगवतीप्रसाद वाजपेयी : सियारामशरण गुप्त : भगवतीचरण वर्मा : अमृतलाल नागर : उपेन्द्रनाथ अश्क : हिमांशु श्रीवास्तव : अन्य सामाजिक उपन्यासकार : समाजवादी उपन्यास : यशपाल : नागार्जुन : रांगेय राघव : अन्य समाजवादी लेखक : आंचलिक उपन्यास : नागार्जुन : फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल : ऐतिहासिक उपन्यास : वृन्दावन लाल वर्मा : चतुरसेन शास्त्री : डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी : साम्यवादी चेतना से अनुप्राणित ऐतिहासिक उपन्यास : मनोवैज्ञानिक उपन्यास : जैनेन्द्रकुमार : इलाचन्द्र जोशी : अज्ञेय : शेखर एक जीवनी : नदी के द्वीप : बारह खम्भा एक नवीन प्रयोग : अन्य कृतियां : निष्कर्ष ।

खण्ड : ख (पृ० २१५ से ४२०)

अध्याय-५ : : साठोत्तरी उपन्यास : (१) पृ० २१५ से ३३२

युगीन चेतना : रेखा : अमृत और विष : शहर में घूमता आईना : नदी फिर बह चली : यह पथ बंधु था : सांप और सीढ़ी : काला जल : मित्रो मरजानी : सूरजमुखी अन्धेरे के : मन-वृन्दावन : प्रेम अपवित्र नदी : एक कटी हुई जिन्दगी एक कटा हुआ कागज : टेरनकोटा : लौटती लहरों की बांसुरी : अनदेखे अनजान पुल : चारु-चन्द्रलेख : अपने अपने अजनबी : उग्रतारा : इमरतिया : बारह घण्टे : मेरी तेरी उसकी बात : शहीद और शोहदे : अन्य : निष्कर्ष ।

अध्याय-६ : : साठोत्तरी उपन्यास (२) पृ० ३३३ से ४२०

अलग अलग वैतरणी : राग दरबारी : आधा गांव : जल टूटता हुआ : सूखता हुआ तालाब : धरती धन न अपना : सफेद मेमने : कांचघर : कड़ियां : तमस : एक पंखुड़ी की तेज धार : मछली मरी हुई : बैसाखियोंवाली इमारतें : अठारह सूरज के पौधे : पचपन खम्भे लाल दीवारें : रुकोगी नहीं ,.... राधिका ? : डाक बंगला : तीसरा आदमी :

आगामी अतीत : अन्धेरे बन्द कमरे : अन्तराल : वे दिन : यात्राएं : आपका बण्टी : कृष्णकली : एक चूहे की मौत : मुरदाघर : अन्य कृतियां : निष्कर्ष ।

खण्ड : ग (४२१-६६५)

अध्याय-७ : : साठोत्तरी उपन्यास -पात्र परिकल्पना पृ० ४२१- ४८६

व्यक्ति- व्यक्तिगत विशेषता : सामाजिक विशेषता : मानवीय विशेषता : मानव-चरित्र को प्रभावित करनेवाले तत्व : आनुवंशिकता : शैशवकालीन प्रभाव : शिक्षा : वातावरण : मित्रों या सम्पर्क का प्रभाव : विशिष्ट परिस्थितियां : मनोवैज्ञानिक स्थितियां : अचेतन मन की दमित वासनाएं : लिबिडो : अचेतन मन की दमित वासनाओं के प्रमुख निष्कृति-मार्ग : प्रक्षेपण : स्वप्न : उदात्तीकरण : विभिन्न ग्रन्थियां : हीनता-ग्रन्थि : क्षति पूर्ति सिद्धान्त : श्रेष्ठता ग्रन्थि : बड़प्पन ग्रन्थि : इलेक्ट्रा और एडिपस ग्रन्थि : सादवादी प्रवृत्ति : मासोकवादी प्रवृत्ति : विभिन्न कुण्ठाएं : काम-कुण्ठा : अर्थ-कुण्ठा : जातिगत कुण्ठा : यौन विकृतियां : समलैंगिकता : हस्तमैथुन : पशु-मैथुन : नपुंसकता : चरित्र-सृष्टि की विभिन्न पद्धतियां तथा उनमें सहायक तत्व : प्रत्यक्ष-विधि : अप्रत्यक्ष-विधि : पात्रों का वर्गीकरण : वर्ग-प्रधान चरित्र : व्यक्तिप्रधान चरित्र : स्थिर चरित्र : गतिशील चरित्र : द्विपरिमाण और त्रिपरिमाण पात्र : प्रमुख, पार्श्वभौमिक, हेत्वर्थक तथा पक्का पात्र : अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी पात्र : उपन्यास में चरित्रांकन की श्रेष्ठता के मानदण्ड : निष्कर्ष ।

अध्याय -८ : : साठोत्तरी उपन्यास--परिवेश पृ० ४६०- ५५१

स्थानगत या भौगोलिक परिवेश : कालगत परिवेश : ऐतिहासिक परिवेश : विदेशी परिवेश : राजनीतिक परिवेश : ग्रामीण परिवेश : ग्रामीण जीवन पर शहरी जीवन-मूल्यों का दबाव : नवीन नवीन परि-

मर्म- परिवर्तन : टूटते हुए गौरव : सामन्तवादी मूल्यों के बदलते चेहरे : पुलिस का रवैया : न्यायतन्त्र और रिश्वतखोरी : छोटी जातियों के साथ होनेवाले अत्याचार और उभरते हुए नये स्वर : चुनाव और गुटबन्दियां : स्त्री-पुरुषों के अनैतिक सम्बन्ध : रस्मो-रिवाज तथा मान्यताएं : नगरीय परिवेश : यान्त्रिक ज़िन्दगी : टूटते-महराते जीवन-मूल्य : भौतिक समृद्धि की अन्धी दौड़ : आवास की समस्या : बेकारी की समस्या : उच्च समाज की रंगीनियां : निम्न-समाज का नरक : मध्य-वर्ग की प्रदर्शन-प्रियता : शहरों में पुलिस का अभिशाप : मनोवैज्ञानिक गुत्थियों का आधिक्य : निष्कर्ष ।

अध्याय-९ : : साठोत्तरी उपन्यास --शिल्प के विभिन्न आयाम पृ० ५५२-५७८

आलोच्य उपन्यासों की शिल्पविधि : वर्णनात्मक या ऐतिहासिक शैली : आत्मकथात्मक शैली : पत्रात्मक शैली : डायरी शैली : चेतन-प्रवाह शैली : प्रतीकात्मकता : कहानियों की पंचतन्त्रात्मक शैली : अन्य विधियां : शिल्प के इतर आयाम : अधोमुखी कथा-प्रवाह : पूर्वदीप्ति : शब्दसहस्मृति : अन्तर्विवाद : अन्तर्भाषण : नाटकीयता का समावेश : लघु उपन्यास - शिल्प शिल्प-संरचना : औपन्यासिक प्रकार और शिल्प-गत आयाम : समानान्तर कथा-प्रवाह : प्रासंगिक कथाओं का संयोजन : भाषा : निष्कर्ष ।

अध्याय - १० : साठोत्तरी उपन्यास --भाषा-शैली पृ० ५७९-६६३

आमुख : वस्तु-निर्माण में भाषा का योग : चरित्रोद्घाटन में भाषा का योग : परिवेश निर्माण में भाषा का योग : शब्द-विचार : ग्राम-भित्तीय उपन्यासों में आये हुए लोकभाषा के शब्द : स्त्रियों की गालियां पुरुषों की गालियां : चर्चित उपन्यासों में आये हुए संस्कृत-शब्द : आलोच्य उपन्यासों में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द : आलोच्य उपन्यासों में प्रयुक्त उर्दू शब्द : पंजाबी के शब्द : बंगला के शब्द : मराठी के शब्द : गुजराती तथा अन्यप्रान्तीय भाषाओं के शब्द : बम्बइया हिन्दी : कहावत और

मुहावरे : नयी अभिव्यंजना : नया शिल्प : नये उपमानों की सूची :
नये रूपक : नये विशेषण : मुहावरों के नये प्रयोग : नयी कहावतें :
व्यंग्यात्मकता : प्रतीकात्मकता : सांकेतात्मकता सांकेतिकता : निष्कर्ष ।

अध्याय -११ : : उपसंहार : पृ० ६६४-६६६
परिशिष्ट -- स पृ० ६७० - ६८२
परिशिष्ट -- र पृ० ६८२-६८३
परिशिष्ट-- ग पृ० ६८२-६६४
परिशिष्ट -- म पृ० ६६५